ॐ

अतिशय-सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी

श्री पार्श्वनाथ विधान

रचयिता

बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	अतिशय-सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी श्री पार्श्वनाथ विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 2018
आवृत्ति	:	5000
सहयोग राशि	:	15/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना 94251-28817 श्री अतिशय-सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी कार्यालय 99367-62685, 94155-90646
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल 94250-05624

पुण्यार्जक

प्रबंधकारिणी तीर्थक्षेत्र कमेटी

श्री अतिशय-सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी (पवाजी)

जिला ललितपुर (उ.प्र.)

हृदयोद्‌गार

बुन्देलखण्ड धर्मप्राण भूमि रही है और आज भी है। यही कारण है कि यहाँ तीर्थक्षेत्रों की संख्या भारत के अन्य भागों की अपेक्षा अधिक है। अतः बुन्देलखण्ड को यदि हम तीर्थक्षेत्रों का रमणीय एवं सघन उद्यान कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

'पावागिरि' यह अतिशय एवं सिद्धक्षेत्र के रूप में विश्वप्रसिद्ध है। सुरम्य पहाड़ी की तलहटी में एक परकोटे के बीच सुस्थित यह पावन-पावागिरि अतिशय-सिद्धक्षेत्र अँगूठी में जड़े नगीने की तरह शोभायमान होता है। पहाड़ी, तीर्थराज के मणि जड़ित मुकुट की उपमा को चरितार्थ करती है। पूर्व द्वार से प्रवेश करते ही प्रांगण में कतारबद्ध खड़े आम्र के वृक्ष हमारा अभिनन्दन कर मंगलमयी यात्रा का शगुन-संकेत देते हैं। यह तीर्थ उद्यान का विशेष सुन्दर एवं सुरभित गुलदस्ता है।

क्षेत्र के इतिहास की ओर दृष्टिपात करने से बहुत अतीत तक पहुँचते हैं। शास्त्रीय उल्लेखानुसार मध्यप्रदेश के दतिया जिले में स्थित श्रमणगिरि-स्वर्णगिरि-सोनागिरि में अष्टम् तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान का समवसरण आया था। उस समवसरण में स्वर्णभद्रादि चार मुनिराजों ने जैनेश्वरी दीक्षा धारण की थी तथा कालान्तर में वहाँ से विहार करते हुए यहाँ पधारे थे तथा चेलना नदी के किनारे स्थित गिरि शिखर पर तपश्चरण कर सिद्ध पद प्राप्त किया था। उन स्वर्णभद्रादि मुनिराजों की पद-रज एवं तपश्चर्या से यह गिरि पावन हो गई। अतः इसे पावनगिरि यह सार्थक नाम प्राप्त हुआ। कालान्तर में पावनगिरि-पावागिरि-पवाजी नाम से प्रसिद्ध हुआ। जैसा कि निर्वाणकाण्ड की निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–

स्वर्णभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि वर शिखर मँझार।
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास॥

तात्पर्य यह है कि यह क्षेत्र भगवान् चन्द्रप्रभ के समय का है अर्थात् लाखों-करोड़ों वर्ष प्राचीन है।

यहाँ भौंयरे में ६ प्रतिमायें विराजमान हैं। उनमें से एक प्रतिमा पर विक्रम संवत् १२९९ उत्कीर्ण है। कुछ प्रतिमायें बावड़ी की खुदाई से निकली हैं, उनमें से एक पर वि.सं. २९९ अंकित है। तथा प्रतिष्ठा स्थान 'पावा' उत्कीर्ण है। इससे इस क्षेत्र की प्राचीनता प्रमाणित होती है।

धर्मप्राण भूमि बुन्देलखण्ड में सात भौंयरे प्रसिद्ध हैं, उनमें से एक 'पवाजी' भी है। शेष छह–देवगढ़, चन्देरी, सेरौन, करगुवाँ, पपौरा और थूवौनजी हैं। कहते हैं ये सातों भौंयरे देवपत-खेवपत पाड़ाशाह नामक परम धार्मिक, उदारदानी एक ही व्यक्ति ने बनवाये थे। उनका समय १२वीं शती अनुमानित है।

इसके अतिरिक्त सिद्धों की पहाड़ियों के विशाल जैन मंदिर के खंडहर, तीर्थ से लगे भोजपुर के खंडहर, भूमिगत एक और भौंयरा, भूमि में ५०-६० वर्ष पूर्व दबा दी गई

अतिशययुक्त बावड़ी (जिसमें से भक्तों को मनोवांछित वस्तुएँ प्राप्त हुआ करती थीं) इत्यादि पुरातात्विक सामग्री के आधार पर यह सुनिश्चित कहा जा सकता है कि 'पावागिरिजी' चतुर्थकालीन प्राचीन क्षेत्र है।

पावागिरिजी क्षेत्र के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान् की अतिशयकारी, कृष्ण पाषाण की, सप्त फणावलि युक्त, पद्मासन, संवत् १३४५ की प्रतिष्ठित, भव्य, सुन्दर प्रतिमाजी विराजमान है, जिनके दर्शन कर भक्तगण अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हैं। जो भी श्रद्धापूर्वक इनकी भक्ति करता है वह निश्चित ही मनोवांछित फल को प्राप्त करता है।

भौंयरे के अतिरिक्त चौबीसी जिनालय, श्री पद्मप्रभ जिनालय, श्री शांतिनाथ जिनालय, श्री बाहुबलि जिनालय, श्री पार्श्वनाथ जिनालय, श्री चन्द्रप्रभ जिनालय, श्री महावीर जिनालय, श्री शीतलनाथ जिनालय, मानस्तंभ के दर्शन हैं। पहाड़ी पर श्री केवली भगवन्तों की चरण पादुकायें, स्वर्णभद्रकेवली, गुणभद्रकेवली, मणिभद्रकेवली, वीरभद्रकेवली के बिम्ब विराजमान हैं। दूसरी ओर पहाड़ी पर नवनिर्मित भगवान मुनिसुव्रत त्रिकाल चौबीसी जिनालय के भव्य दर्शन हैं। पहाड़ी पर एक अतिप्राचीन गुफा भी है जिसकी मान्यता भूरे बाबा के रूप में पूरे बुन्देलखण्ड में प्रसिद्ध है।

क्षेत्र के पश्चिम दिशा में वेत्रवती नदी और उत्तर में चेलना नदी अति सुरम्य लगती हैं। सम्मुख पहाड़ी पर भी चरण-चिह्न बने हैं, यह पहाड़ी भी क्षेत्र का एक मनोरम हिस्सा है।

क्षेत्र प्रांगण में विशाल धर्मशाला, शुद्ध भोजनशाला, स्वर्णभद्र पुस्तकालय, स्वर्णभद्र पाठशाला एवं अन्य सुविधाओं के युक्त यात्रियों के लिये सभी व्यवस्थायें उपलब्ध हैं।

क्षेत्र पर प्रतिवर्ष अगहनवदी दोज से लेकर पंचमी तक वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें आस-पास एवं अन्य दूरस्थ स्थानों से विपुल धर्मप्रेमी जैन-जैनेतर जनता आती है जो भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के दर्शन कर मनवांछित फल को प्राप्त कर शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शांति को प्राप्त करती है।

भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की भक्ति से अपने आप को जोड़ने के लिए इस युग के **सर्वश्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज** के परम प्रभावक शिष्य **मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने **'पावागिरिजी श्रीपार्श्वनाथ विधान'** की रचना करके हम सभी भक्तों के लिए भक्ति करने का एक सुंदर सोपान प्रदान किया है। क्षेत्र के जीर्णोद्धार और विकास में मुनिश्री का आशीर्वाद एवं कृपा हमेशा प्राप्त होती रहती है। हम सभी उनके पावन चरणों में बारम्बर नमोऽस्तु निवेदित करते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की कृपा से पूरे विश्व में शांति का वातावरण निर्मित हो एवं सभी जीव परम सुख को प्राप्त करें इसी मंगल भावना के साथ....

बा.ब्र. संजय, मुरैना

जय बोलिये

देवाधिदेव, अरिहंतदेव,
देवों के देव, परमदेव,
चैतन्य चमत्कारी, परमधैर्यधारी,
अतिशयकारी, मंगलकारी,
चिंतामणि, पारसमणि,
उपसर्गों के विजेता, मोक्षमार्ग के नेता,
भयदु:खहर्त्ता, विश्वशांतिकर्त्ता,
विघ्नविनाशक, संकटमोचक
निराकुलचित्त, परमपवित्र
पावागिरिजी के भौंयरे वाले, काले-काले
सांवलिया मूलनायक
परमपूज्य श्री पार्श्वनाथ भगवान की जय।

विषय वस्तु

प्रथम अर्घ्यावलि :	मूल आठ ऋद्धि भेद (८ अर्घ्य)
द्वितीय अर्घ्यावलि:	सोलहकारण भावना, चौतीस अतिशय, अनंतचतुष्टय, अष्टप्रातिहार्य, रत्नत्रय, दसलक्षणधर्म, उत्तममंगलशरणरूप, अष्टमंगलद्रव्य, शत-इन्द्रों द्वारा पूजा, ग्रहभयनिवारक, व्यसनविनाशक, अष्टकर्म, पंचपरावर्तन, पंचकल्याणक, नवदेवरूप, श्रुतरूप। (१६ अर्घ्य)
तृतीय अर्घ्यावलि :	अठारहदोषरहित, परिग्रहरहित। (३२ अर्घ्य)
क्षेत्रअर्घ्यावलि :	चौदह अर्घ्य। (३ महार्घ्य, पूर्णार्घ्य सहित कुल ७४ अर्घ्य)

भजन

(लय : भक्ति में झूमें....)

भक्ति में झूमें नाचें, धर्मालु आये हैं।
पावागिरि के पार्श्व तेरे श्रद्धालु आये हैं॥
तेरे अतिशय खूब निराले, पूरी इच्छा करने वाले-२
क्यों जोड़ें ना हम डोर, जब ये कृपालु पाये हैं। पावागिरि के.....
तुम बालब्रह्मचारी हो, चैतन्य चमत्कारी हो-२
क्यों ना करें हम गुणगान, जब ये दयालु पाये हैं। पावागिरि के.....
संकट उपसर्ग विजेता, हो मोक्षमार्ग के नेता-२
तेरी पूजा करने भक्त टोलियाँ लेकर आये हैं। पावागिरि के.....
जितने न नभ में तारे, तूने भक्त हैं उतने तारे-२
'सुव्रत' तरने को आज पावागिरि तीरथ आये हैं। पावागिरि के.....

आरती

(लय : जब से गुरु दर्श.....)

पवाजी के पार्श्व मिले, भक्त लगें खिले-खिले,
आरती के दीप जल रहे हैं, भक्तियों को हम मचल रहे हैं॥
आपने जो साधना रचाईऽऽऽ,
तभी तो संकटों की हुई विदाई
सो हमारे नाथ हो, हो नमोऽस्तु आपको-२
पल हमारे अब संभल रहे हैंऽऽऽ, आरती में हम उछल रहे हैं। पवाजी के...
देखी आपकी जो ज्ञानधाराऽऽऽ,
पूजने को विश्व आया सारा।
हम भी आये दौड़ के, हाथ अपने जोड़ के-२
प्रार्थना के स्वर निकल रहे हैंऽऽऽ, पाप कर्म सारे ढल रहे हैं। पवाजी के...
बाल ब्रह्मचारी ब्रह्म ध्यायेऽऽऽ,
मुक्ति वधू आपको रिझाये।
हम को नाथ थाम लो, मोक्ष का मुकाम दो-२
'सुव्रत' आपके ही हो रहे हैंऽऽऽ, आपके ही पथ पे चल रहे हैं। पवाजी के...

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (लय : देख तेरे संसार की.....)

अतिशय सिद्ध क्षेत्र पावागिरि, जिनशासन की शान
कि ये तो तीरथ बड़ा महान, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥
अतिशयकारी सांवलिया प्रभु, चिंतामणि श्रीमान्
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥
दर्शन करके मन अकुलायेऽऽ, पूजन करने द्रव्य सजाये।
भक्त चेतना चौक पुरायेऽऽ, हृदयासन भी कमल खिलाये॥
श्रद्धा की अँखियों ने टेराऽऽ, अंतर-मन में डालो डेरा।
तो भक्तों के कष्ट मिटेंगे, कर्म काट भगवान बनेंगे॥
पारस बनने आकुल-व्याकुल, हम भक्तों के प्राण,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्....। (पुष्पांजलिं...)

जिसने अर्जी यहाँ लगायीऽऽ, उसने स्वस्थ चेतना पायी।
तन-मन से वह स्वस्थ हुआ हैऽऽ, जिसे आपका दर्श हुआ है॥
अर्जी सुन शुद्धातम का जल, बरसाओ भगवान्,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जो भी घात लगाने आयेऽऽ, बाल न बाँका वो कर पाये।
अतिशय लखकर बने पुजारीऽऽ, ऐसी महिमा नाथ तुम्हारी॥
हमको चंदन सी छाया दो, चंदन से भगवान्,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसार-ताप विनाशनाय चंदनं...।

जिसने भक्ति दिखाके थोड़ीऽऽ, डोर आपसे अपनी जोड़ी।

चमत्कार सो देव दिखातेऽऽ, भक्तों के दुख कष्ट मिटाते॥
पावागिरि के पार्श्व न छूटें, दो अक्षय वरदान,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

ज्यों कांटों में पुष्प महकतेऽऽ, उपसर्गों में आप चमकते।
हमको काम-कमठ ने घेराऽऽ, हमने नाम जपा झट तेरा॥
लाज राखने काम कमठ का, कर दो काम तमाम,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

जितनी तृप्ति मिली न खाकेऽऽ, उतनी मिली यहाँ पर आके।
प्रभु सम्यक्त्व सुधा झलकायेऽऽ, हम भी उसको चखने आये॥
पावा के बाबा के मावा, दें निज के पकवान,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हमने जिसको भी अपनायाऽऽ, उसने ही हमको भटकाया।
अब पावागिरि आकर नाचेंऽऽ, सगे मिले प्रभु पारस सांचे॥
द्वन्द्व-अन्ध कर दूर बनालो, भक्तों को भगवान्,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

चमत्कार हों यहाँ अनोखेऽऽ, वैर विरोध कर्म के रोकें।
अतिशयकारी गंध उड़ी हैऽऽ, निज से निज की जंग छिड़ी है॥
कर्म शत्रु को हम ललकारें, दो निज तीर-कमान,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं..।

भीड़ जगत में दिखती भारीऽऽ, गुम ना जायें भक्त पुजारी।
थामो स्वामी नाँव हमारीऽऽ, यही आपकी जिम्मेदारी।
तारण-तरण जहाज तार दो, हमें भक्ति फल दान,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जिसने भी प्रभु तुम्हें पुकाराऽऽ, उसे आपने दिया सहारा।
हम पारस दरबार में आयेऽऽ, खाली झोली हम भी लाये॥
जैसी इसको भरना भर दो, पर कर दो कल्याण,
कि स्वामी पार्श्वनाथ भगवान्, कि बाबा पार्श्वनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुण्डलपुर में....)

बाजे पावागिरि रमतूला-२, कि गर्भ कल्याणक है-२, पार्श्वनाथ का।
बाजे पावागिरि में बधाई-२, कि वामाजी को पर्व मिला-२, पार्श्वनाथ का।
बाजे पावागिरि शहनाई-२, कि देव उत्सव करते-२, पार्श्वनाथ का।

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर द्वार।
वामा माँ के गर्भ में, आये पार्श्वकुमार॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : श्रीमति माँ तेरा लाला...)

वामा माँ तेरा लाड़ला, साँवला सलोना सा लाला है।
ये तो जग को पालेगा, तूने इसको पाला है॥
हे माता, तू है धन्या, तीर्थंकर को जन्मा है।
वामा माँ है पुण्यात्मा, तीरथ क्षेत्र बनारस है॥
मिले शांति पलभर जीवों को, जन्में जब प्रभु पारस हैं।
सुर हरषें, रत्न वर्षें, क्षेत्र पावागिरि धामा है॥

(दोहा)

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारसनाथ।
विश्वसेन के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(लय : आत्मा के वास्ते....)

अय! हमारी आतमा, कर्म का कर खातमा, तज दे भोग विलास-धार ले संन्यास।
पद तभी अर्हत् मिले, सिद्धसुख शाश्वत मिले, आतमा का वास-धार ले संन्यास॥
स्वार्थ के हर रिश्ते नाते, मोह का परिवार है।
चंद पल की जिंदगी है, कर्म का संसार है।
कौन हमको साथ दे, कौन भव से तार दे, कौन दे विश्वास-धार ले संन्यास॥

(दोहा)

केशलोंच कर वस्त्र तज, पार्श्व जन्म के काल।
बने दिगम्बर सो करें, भक्त नमोऽस्तु त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(दोहा)

धरा दिगंबर रूप ज्यों, गहन हुआ उपसर्ग।
कमठ जीव शंवर बना, डिगे न मुनिवर पार्श्व॥

(लय : देख तुम्हारी....)

देख तुम्हारी कोमल काया, फूलों को शरमाना आया।
देख तुम्हारी कठिन साधना, तूफानों का दिल भर आया।
देख तुम्हरी ध्यान तपस्या, कर्मघातिया खाक हो गये।
सारी दुनियाँ करे नमोऽस्तु, केवलज्ञानी आप हो गये॥

(दोहा)

चैत्र चतुर्थी कृष्ण को, पार्श्वनाथ जिनराज।
दिये तत्त्व उपदेश सो, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अर्हत् राम रमैया....)

पारसनाथ खिवैया हो, पारसनाथ खिवैया....।
पारस जिनवर पावन हैं, करुणा के वे सावन हैं।
मोक्ष सप्तमी पाकर प्रभु ने, पार लगा ली नैया....॥
पुद्गल तन का छोड़ पींजरा, चेतन उड़ी चिरैया।
भवसागर से पार हुये हैं, चिंतामणि तिरैया।
हो सम्मेदशिखर सा उत्सव, पावागिरि में भैया....॥

(दोहा)

श्रावण शुक्ला सप्तमी, गये पार्श्वप्रभु मोक्ष।
अर्पित लाडू अर्घ कर, करें नमोऽस्तु दें धोक॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

पावागिरि के पार्श्वप्रभु, करें हृदय पर राज।
भक्त कहें जयमालिका, करके नमोऽस्तु आज॥

(ज्ञानोदय)

भारत के उत्तरप्रदेश में, जिला ललितपुर है प्यारा।
जिसके उत्तर में पावागिरि, अतिशय सिद्धक्षेत्र न्यारा॥
उच्च शृंखलायें पर्वत की, जिसमें एक गुफा प्यारी।
जहाँ भौंयरे में पारस प्रभु, - की प्रतिमा अतिशयकारी॥१॥
प्रतिमा और भोंयरेजी का, है इतिहास महासुन्दर।
पाड़ाशाह देवपत-खेवपत, रचवाये तीरथ मंदिर।
लेकिन देख प्रशस्ती लगता, तीरथ बहुत पुराना है।
लगभग दो हजार वर्षों से, पावागिरि सुहाना है॥२॥
पावनगिरि या पावागिरि से, तीर्थ पवाजी रहा प्रसिद्ध।
स्वर्णभद्र गुणभद्र वीर मणि, हुये यहीं से चारों सिद्ध।

शास्त्र कहें कि सोनागिरि में, चन्द्रप्रभु जब गये वहाँ।
समवसरण से ये चारों मुनि, दीक्षित होकर आए यहाँ॥३॥
इससे लगे कि तीर्थ पवाजी, चतुर्थकाल का तीरथ है।
पर लगभग दो सौ वर्षों से, अतिशय सिद्धि कीरत है।
यहाँ गुफा मढ़िया चर्चित है, भूरे बाबा की गुन लो।
फिर भी पारस सबके स्वामी, जिनके अतिशय भी सुन लो॥४॥
पारसमणि सम पारसप्रभु हैं, मनोकामना पूरक हैं।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि पाते, पारस प्रभु के पूजक हैं।
कभी एक वृद्धा माता का, नौजवान सुत इकलौता।
बेलाताल ताल में डूबा, मरणासन्न वही लौटा॥५॥
पारस प्रभु की श्रद्धालु माँ, पुत्र मरा-सा लेकर के।
यहाँ लिटा गंधोदक छिड़के, तो वह बैठा उठकर के।
तब नारे जयकारे गूँजे, पावागिरि के पारस के।
गिरा कुएँ में बालक निकला, मंत्र जपे जब पारस के॥६॥
सन् उन्नीस सौ सत्तर में, जब हुई भीड़ थी गजरथ की।
तो दर्शक से लदे पेड़ की, डाली एक तभी चटकी।
जिससे कुछ तो गिरे कुएँ में, कुछ धरती पर गिरे धड़ाम।
लेकिन हुआ बाल ना बांका, जय-जय पारस तुम्हें प्रणाम॥७॥
अनगिन अतिशय कह ना सकते, पावागिरि के पारस के।
दास लगा अरदास पास में, वास करें बस पारस के।
श्वास-श्वास विश्वास कहें यह, जीना बिना न पारस के।
भरो भक्ति रस निज रस हममें, पारसनाथ बनारस के॥८॥
अभरा बनारस पारस में रस, जिसके रसिया पारस हों।
भक्त अनंतानंत तर गये, पा-रस पारस पारस हों।
कोई खाली हाथ न लौटे, निज रस झलके पारस में।
दिखे शिखरजी और बनारस, पावागिरि के पारस में॥९॥

चारों धामों की यात्रा का, पुण्य यहाँ पर मिलता है।
दर्शन पूजन नमोस्तु करके, हृदय कमल भी खिलता है।
ग्रह परिग्रह भय भूत भागते, हेय तत्त्व समाप्त होते।
उपादेय से मुक्तिवधू के, यहीं स्वयंवर भी होते॥१०॥
पावागिरि के पारस दर्शन, भाव सहित बस कर ले रे।
खुद चैतन्य चमत्कारी बन, भव-सागर से तर ले रे।
'सुव्रत' यहाँ वहाँ क्यों भटके, पावागिरि में रम जा रे।
पावा के बाबा का मावा, चख के पारस बन जा रे॥११॥

(सोरठा)

लोहा सोना होए, पारसमणि के स्पर्श से।
भक्त सु-पारस होए, पारस प्रभु के दर्श से॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

प्रथम अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, धारें पार्श्व जिनंदा।
दूर करे अज्ञान अँधेरे, जय पारस अर्हंता।
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं बुद्धिमंदताविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

विक्रिया ऋद्धि के भेद ग्यारह, धारें पार्श्व महंता।
मायाचार कपट छल हरके, दें आतम आनंदा॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं विश्वासघातविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

क्रिया ऋद्धि के भेद रहे नौ, धारें पार्श्व जिनेशा।
भक्तों के गम संकट हरते, पारसनाथ हमेशा॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं यात्रा-वाहन-दुर्घटनाविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

तप ऋद्धि के भेद सात हैं, धारें पार्श्व विरागी।
पाप ताप संताप मिटाते, मुक्तिरमा के रागी॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परिवारिक वैर-विरोधविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

बल ऋद्धि के भेद तीन हैं, धारें पार्श्व तिरैया।
तन मन वचनों के दुख हरके, पारस थामें नैया॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं त्रियोग-विकृतिविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

औषध ऋद्धि के भेद आठ हैं, धारें पारस योगी।
रोग दूर कर स्वस्थ बनाते, शुद्धातम के भोगी॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं समस्तरोगविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

रस ऋद्धि के भेद रहे छह, धारें पारस रसिया।
नीरस जीवन सरस बनाते, भक्तों के मन वसिया॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं धर्म-अरुचिविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

क्षेत्र ऋद्धि के भेद रहे दो, धारें पारस ज्ञानी।
चरण-शरण दे सबको तारें, जय पारस वरदानी॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पराश्रय-भावविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

महार्घ्य

आठ भेद की चौषठ ऋद्धि, धारें पारस स्वामी।
चिदानंद के भोगी दाता, दुनियाँ तभी रिझानी॥
पावागिरि के पारस भज के, भक्त झूमते आहा।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, मुख से बोलें स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय महार्घ्यं...।

द्वितीय अर्घ्यावली

(काव्य रोला)

तीर्थंकर के योग्य, भावना सोलह भाते।
क्यों न हुआ संयोग, सदा हम पारस ध्याते॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं मनोकामनापूरक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

अतिशय कुल चौतीस, बनारस के पारस के।
दिखते संख्यातीत, पवाजी के पारस के॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धिदायक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

दर्शवीर्य सुख ज्ञान, चतुष्टय निज का धन है।
दिये पार्श्व वरदान, तभी तो भक्त मगन है॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं दुःखदरिद्रताविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

प्रातिहार्य जो आठ, ठाठ प्रभु के दरबारी।
भक्त सीखते पाठ, गाँठ बस खुले हमारी॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं सुखशांतिप्रदायक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

रत्नत्रय के नाथ, संत मुनियों के स्वामी।
रत्नत्रय दो नाथ, भजें हम पारस स्वामी॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं दीक्षायोग्य बल-कुल प्रदायक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

दसलक्षण का धर्म, निरन्तर झरता रहता।
इससे हर लो कर्म, तीर्थ यह कहता रहता॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं कलह-कषायविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

उत्तम मंगल रूप, शरण तुम ही हो साँचे।
जिसको मिलते आप, भक्त वो खुश हो नाँचे॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं निजनिवासदायक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

उपजा केवलज्ञान, द्रव्य आठों आ धमके।
भक्तों के कल्याण, हुये हैं मंगल जमके॥
पावागिरि के पार्श्व, सुनो अब अर्ज हमारी।
अर्घ्य चढ़ायें आज, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं सर्व अमंगलहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८

(सखी)

मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥
ज्यों पार्श्व पवाजी आये, इन्द्रादि पूजने आये।
सो चमत्कार हों भारी, है पारस महिमा न्यारी॥

ॐ ह्रीं सर्वोच्च वैभवदायक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

प्रभु पारस ध्यान लगाये, दुख संकट भय घबराये।
वह चंचलता सब जीते, जो पारस का रस पीते॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं नवग्रहभयविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

प्रभु पार्श्व क्षमा झलकाये, तो कमठ जीव पछताये।
वो व्यसन बुराई छोड़े, जो प्रभु से नाता जोड़े॥

मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं समस्तव्यसन-बुराई विनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

जब लड़ ली कर्म लड़ाई, तो मुक्ति पवाजी आई।
तब अष्ट कर्म घबराये, चैतन्य पार्श्व झलकाये॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं समस्तकर्म-भर्मविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

कर पारस प्रभु के दर्शन, हरने पाँचों परिवर्तन।
पावागिरि हमको भायी, हम नाचें खूब बधाई॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं अशुभ-संकल्प-विकल्पहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

जो पारस को पहचाने, कल्याणक लगे मनाने।
बज उठी आत्म शहनाई, हो उत्सव घर-घर भाई॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं समस्तशोकवियोगविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

पारस प्रभु अतिशयकारी, नवदेवों के अधिकारी।
मत यहाँ-वहाँ अब डोलो, भज पारस अखियाँ खोलो॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं समस्तव्यर्थभ्रमणहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

पारस वाणी कल्याणी, श्रुत आत्मज्ञान की दानी।
सुखशांति जिन्हें मन भाये, वो पावागिरि को आये॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं समस्तविध-अशांतिविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

महार्घ्य

है व्यर्थ हमारा जीवन, प्रभु पारस कर दो पावन।
जितने ना नभ में तारे, प्रभु उतने तुमने तारे॥
पावागिरि हमको खींचे, सो भक्त नहीं हैं पीछे।
हम कृपा पात्र बन जायें, कर नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥
मन भजले पारसनाथ, पावागिरि तीरथ पाके।
हम करते नमोऽस्तु आज, सादर यह अर्घ्य चढ़ाके॥

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय महार्घ्यं...॥

तृतीय अर्घ्यावली

(लय : माता तू दया.....)

पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
तुम क्षुधा दोष जयकर, निज का पा-रस चखते।
जो ध्यायें तुम्हें वही, तुमको पा-रस चखते॥
हमको संतुष्ट करो, यह भूख मिटा देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं क्षुधादोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

प्रभु तृषा दोष हरकर, ज्ञानामृत बरसाओ।
हम रहे मरुस्थल सम, हमको क्यों झुलसाओ॥
हर प्यास मिटा दे वो, पा-रस बरसा देना।

हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं तृषादोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

वेदर्द बुढ़ापा दे, नरकों सी दुख पीड़ा।
तुम हरे यातना ये, सो पार्श्व बने हीरा॥
परतंत्र दशा हर लें, तुम हाथ पकड़ लेना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं वृद्धदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

दुख रोग जिसे होता, वह तुमको याद करे।
वह स्वस्थ मस्त हो जो, दिल से फरियाद करे॥
पारसमणि औषध दे, शृंगारित कर देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं रोगदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

रोते ही जन्म लिये, फिर जन्म-जन्म रोते।
हैं धन्य जन्म उनके, जो पारस के होते॥
हम जन्म धन्य कर लें, वह शक्ति हमें देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं जन्मदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

बस नाम मृत्यु का सुन, सब डर-डरकर कँपते।
जो पार्श्व नाम जपते, वो मृत्युंजय बनते॥
हम मृत्यु विजेता हों, वो समाधिमरण देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं मृत्युदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

डर कुछ न उन्हें लगता, जो मंत्र जपें तेरा।
वे निर्भय हों जिनका, तेरे चरणों में डेरा॥
हम कभी न घबरायें, वह संबल प्रभु देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं भयदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

है गर्व हमें कि हम, जिनशासन के अनुचर।
हैं भक्त पार्श्व प्रभु के, अध्यात्म लक्ष्य चुनकर॥
छूटें न पवा के पार्श्व, आशीष यही देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥
पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं गर्वदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

तुम वीतराग ठहरे, क्या हमसे काम तुम्हें।
पर हम तो सरागी हैं, है तुमसे काम हमें॥
पारस करुणा बरसा, हर काम बना देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

पारस तू दया करके, चरणों में जगह देना।
हम पावागिरि आये, हमें अपना बना लेना॥

ॐ ह्रीं रागदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

(जोगीरासा)

कमठ जीव उपसर्ग कराये, डिगे न पारस देवा।
द्वेष किया न उससे सो वह, भक्त बना स्वयमेवा॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं द्वेषदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

मोही जग को अपना माने, अतः झेलते पीड़ा।
पारस को अपना लो प्यारे, बन जाओगे हीरा॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं मोहदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

चिंता के हो आप विजेता, और भक्त हम तेरे।
फिर क्या चिंता हमको जब प्रभु, हाथ शीश पर फेरे॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं चिंतादोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

अरति विजेता पार्श्वनाथ को, जिस प्राणी ने चाहा।
उसको मिलता है मनचाहा, मिले नहीं अनचाहा॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं अरतिदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

निद्रा विजयी पारस को तज, नींद चैन उड़ जाती।
नींद चैन वो पाते जिनकी, चैन यहाँ जुड़ जाती॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं निद्रादोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

विस्मय हर्त्ता के विस्मय से, सबको हो हैरानी।
श्री चैतन्य चमत्कारी को, पाने की अब ठानी॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं विस्मयदोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

मद हरता के अंग-अंग तो, शांति सुधा बरसाते।
मद में फूलें इनको भूलें, वो ही अशांति पाते॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं मददोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

स्वेदजयी को भेद करे जो, वो दुख पाके रोते।
पारस को जो करें समर्पण, धनी सुखी वो होते॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं स्वेददोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

खेद विजेता की अर्चायें, करें हृदय से जो भी।
उसकी मिटे थकावट आलस, ऊर्जा पाते वो ही॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं खेददोषहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

(दोहा)

बाह्य परिग्रह दस तजे, भजे दिगम्बर रूप।
अंतर के चौदह नशें, मिले पार्श्व चिद्रूप॥

(जोगीरासा)

कमठ जीव ने क्रोध किया तो, पार्श्व क्षमा बरसाये।
उस रिमझिम में क्रोध शांति को, हम पावागिरि आये॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं क्रोधपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

मानी ने उपसर्ग किया तो, प्रभु ने पर्व मनाये।
मान जीत कर पर्व मनाने, हम पावागिरि आये॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं मानपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

मायावी की मायाओं में, प्रभु ना फसने पाये।
भव का मायाजाल त्यागने, हम पावागिरि आये॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं मायापरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

कमठ जीव ने लोभ किया तो, पारस रत्न लुटाये।
उन रत्नों से झोली भरने, हम पावागिरि आये ॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं लोभपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

कमठ जीव ने मिथ्यादर्शन, प्रभु दर्शन कर फेंका।
यह परिग्रह हम त्याग सकें सो, प्रभु को माथा टेका॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

हास्य नाम का परिग्रह तजके, पार्श्व बने भव तीरा।
ज्ञानशरीरी बनने हम भी, भजें पवा के हीरा॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं हास्यपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

कमठ जीव रति राग त्याग कर, पारस को पहचाना।
हम भी पावागिरि में आकर, कब धारें मुनि वाना॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं रतिपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२५॥

अरति त्यागकर पारस प्रभु जी, हुये ब्रह्म आसीना।
पावागिरि के पारस के बिन, अब ना हमको जीना॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं अरतिपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२६॥

उपसर्गों का शोक न करके, प्रभु तो योग लगायें।
तीर्थ पवाजी में शोकाकुल, आकर शोक मिटायें॥

पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं शोकपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२७॥

पावागिरि के पार्श्व पूजकर, सारे भय नश जाते।
दृढ़ विश्वासी बनकर सेवक, अपने काम बनाते॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं भयपरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२८॥

पारस प्रभु की भक्ति करके, हों शृंगार हमारे।
चेतन रूप सजाने हमने, पारसनाथ निहारे॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सापरिग्रहहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२९॥

भाव नपुंसक वेद दूरकर, बने निरंबर स्वामी।
बाल ब्रह्मचारी पारस को, बारम्बार नमामि॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३०॥

स्त्रीवेद को आप हरण कर, मुक्तिवधू पर रीझे।
ब्रह्म विजेता निज के रसिया, हम को लगते सीधे॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३१॥

पुरुषवेद को त्याग बने हो, आतम के पुरुषार्थी।
पावागिरि में निज गजरथ हों, बन जाना तुम सारथी॥
पावागिरि के पारस साँचे, मन की अखियाँ खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोऽस्तु, जय-जय पारस बोलें॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदहर्त्ता पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३२॥

महार्घ्य

(ज्ञानोदय)

पार्श्व भौंयरे वाले प्रभु के, साथ विराजे जो जिनवर।
विश्वशांति के मुक्तिदूत हैं, जिनकी छाया है हम पर॥
पावागिरि के पार्श्वनाथ के, ज्यों तुम आजू-बाजू में।
करो सिफारिश आप हमारी, तो हम बैठें बाजू में॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ के साथ में, सबको नमोऽस्तु आज।
भक्त चढ़ायें अर्घ्य सो, दो चरणों का राज॥३३॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथसहसमस्तजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अतिशय सिद्धक्षेत्र पावागिरि, तीरथ है नव देवों के।
अटके भटकों के आश्रय हैं, संगम हैं सब पर्वों के॥
कष्ट रोग संकटमोचक हैं, धरती के सिद्धालय हैं।
पारसनाथ मूलनायक की, अतः बोलते हम जय हैं॥

(दोहा)

छप्पन कोष्ट विराजके, पूजे पारसनाथ।
नमोऽस्तु कर्त्ता को मिले, सदा आपका साथ॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ षट्पंचशत् कोष्टस्थिताय मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

क्षेत्र अर्घ्यावली

(लय : भक्ति बेकरार है....)

भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥
चौबीसीमय चन्द्रप्रभु को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीचन्द्रप्रभसहचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

पद्मप्रभु के साथ सभी को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपद्मप्रभसहसमस्तजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

परिषह विजयी बाहुबली को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

पार्श्वनाथ उपसर्गजयी को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीसमस्तपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

चारु चन्द्रसम चन्द्रप्रभु को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।

पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीचन्द्रप्रभसहसमस्तजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

शासननायक महावीर को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

पाप ताप हर शीतल प्रभु को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीशीतलनाथसहसमस्तजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

मान विदारक मानस्तंभ को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीमानस्तम्भ-स्थित-समस्तजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

सिद्ध हुये मुनि स्वर्णभद्र को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीस्वर्णभद्र सामान्यकेवली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

मुक्त हुये मुनि गुणभद्र को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥

भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीगुणभद्र सामान्यकेवली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

मोक्ष गये मुनि मणीभद्र को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीमणिभद्र सामान्यकेवली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

ज्ञानशरीरी वीरभद्र को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीवीरभद्र सामान्यकेवली जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

त्रय-चौबीसी सुव्रतप्रभु को, हम तो अर्घ्य चढ़ाते हैं।
पावागिरि में करके नमोऽस्तु, हम आनन्द मनाते हैं॥
भक्ति बेशुमार है, पारस का दरबार है।
पावागिरि के पारस की, हो रही जय-जयकार है॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथसह-त्रिकालचतुर्विंशति जिनेद्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

क्षेत्र का समुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

सिद्धक्षेत्र अतिशय यहाँ, पार्श्वनाथ के साथ।
हम पूजें नव देवता, कर नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथसह समस्त नवदेवता जिनसमूहेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

॥ ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मंगल उत्तम शरण हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोऽस्तु आज॥

(चौपाई)

जो जीवन से हार चुके हैं, कर्मों से जो लुटे-पिटे हैं।
जिनसे सारी दुनियाँ रूठी, जिनकी किस्मत टूटी फूटी॥१॥
फिरते हैं जो मारे-मारे, जिनके छूटे सभी सहारे।
यदि पारस को वो जन ध्यावें, तो अतिशयकारी फल पावें॥२॥
क्योंकि पार्श्वप्रभु हैं ही ऐसे, तो दिन बुरे टिकेंगे कैसे।
काशी से सम्मेद शिखरिया, बस पारस की उड़े चदरिया॥३॥
आप चढ़े हो मोक्ष डगरिया, फिर भी रखते भक्त खबरिया।
सो सबके दिल वसो सँवरियाँ, हम तो बन बैठे केशरिया॥४॥
झलकाओ तो ज्ञान गगरिया, हम भी पायें सिद्ध नगरिया।
सभी जगह तो अतिशय तेरे, घर-घर नगर-नगर में डेरे॥५॥
काशीजी में पारस-पारस, सम्मेदशिखर में पारस-पारस।
बिजौलिया में पारस-पारस, अंतरिक्ष में पारस-पारस॥६॥
अणिन्दाजी में पारस-पारस, अहिच्छेत्र में पारस-पारस।
अंकलेश्वर में पारस-पारस, चवलेश्वर में पारस-पारस॥७॥
तारंगा में पारस-पारस, महुआजी में पारस-पारस।
कचनेर में पारस-पारस, नागफणि में पारस-पारस॥८॥
नेमावर में पारस-पारस, नैनागिरि में पारस-पारस।
गोपाचल में पारस-पारस, करगुँआजी में पारस-पारस॥९॥

पावागिरि में पारस-पारस, कण-कण में हैं पारस-पारस।
हे! चिंतामणि पारस-पारस, उपसर्ग विजेता पारस-पारस॥१०॥
संकटमोचक पारस-पारस, सो हम बोलें पारस-पारस।
हमें बना लो पारस-पारस, 'सुव्रत' हों बस पारस-पारस॥११॥

(सोरठा)

पावागिरि के पार्श्व, अतिशकारी नाम हैं।
पूरी करते आश, शीघ्र बनाते काम हैं॥
दाता पारसनाथ, चित्चैतन्य विलास हैं।
नमोऽस्तु कर के दास, पाते निजी निवास हैं॥

ॐ ह्रीं पावागिरिजी अतिशय-सिद्धक्षेत्रस्थ मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

प्रशस्ति

जहाँ मूलनायक रहे, पार्श्वनाथ भगवान।
पूर्ण पवाजी में हुआ, पारसनाथ विधान॥
मोक्ष सप्तमी को हुआ, प्रभु का जब निर्वाण।
तब विधान लिख चाहते, हो सबका कल्याण॥
दो हजार सोलह रहा, अगस्त नौ तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥इति शुभम्॥